अध्याय
02

लेखन कला और शहरी जीवन

सीखने के प्रतिफल-

इस अध्याय से छात्र मेसोपोटामिया सभ्यता और लेखन प्रणाली के विकास के बारे में जानेंगे।

परिचय

मेसोपोटामिया शब्द की उत्पत्ति **यूनानी भाषा** के दो शब्दों **मेसोस अर्थात् मध्य एवं पोटैमोस अर्थात् नदी से हुई है। शाब्दिक अर्थ—दो नदियों के मध्य में स्थित प्रदेश।**

मेसोपोटामिया सभ्यता

- मेसोपोटामिया शब्द **दजला और फ़रात दो नदियों** के मध्य की उपजाऊ भूमि को इंगित करता है। वर्तमान समय में यह क्षेत्र इराक देश का एक हिस्सा है।
- मेसोपोटामिया की सभ्यता अपने **शहरी जीवन, सम्पन्नता, विशाल एवं समृद्ध साहित्य, गणित एवं खगोल विद्या** के लिए प्रसिद्ध थी।
- इस सभ्यता के **शहरीकृत दक्षिणी भाग को सुमेर** एवं अक्कद कहा गया। 2000 ई. पू. के पश्चात् जब बेबीलोन एक महत्वपूर्ण शहर बन गया तब **दक्षिणी क्षेत्र को बेबीलोनिया** कहा जाने लगा।
- लगभग 1100 ई. पू. से जब असीरियाइयों ने उत्तर में असीरिया राज्य की स्थापना की, तब इस क्षेत्र को असीरिया कहा जाने लगा। इस प्रदेश की **प्रथम ज्ञात भाषा सुमेरियन अर्थात् सुमेरी** थी।
- 2400 ई. पू. में अक्कदी भाषी लोगों के आने पर सुमेरियन भाषा का स्थान अक्कदी भाषा ने ले लिया।
  इस क्षेत्र में 1400 ई. पू. से अरामाइक भाषा का प्रचलन होने लगा। यह भाषा हिब्रू से मिलती-जुलती थी।
- यूरोपवासियों के लिए मेसोपोटामिया अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि बाइबिल के प्रथम भाग **'ओल्ड टेस्टामेंट'** में इसका उल्लेख कई संदर्भों में किया गया है।

© JCERT not to be republished

मेसोपोटामिया और उसका भूगोल

इराक भौगोलिक विविधता का देश है। इसका पूर्वोत्तर भाग हरे-भरे, ऊँचे-नीचे मैदान, वृक्षाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं, स्वच्छ झरने एवं पर्याप्त वर्षा वाला है। मेसोपोटामिया सभ्यता इसी का भाग है।

यहाँ 7000 से 6000 ई.पू. के बीच खेती शुरू हो गयी थी। इसके उत्तर में ऊँची भूमि है जहाँ 'स्टेपी' घास के मैदान हैं। अतः यहाँ पशुपालन खेती की तुलना में आजीविका का अच्छा साधन है।

इसका **दक्षिणी भाग एक मरुस्थलीय प्रदेश है। यहीं सबसे पहले नगरों और लेखन प्रणाली** का विकास हुआ था।

इस देश की प्रमुख नदियाँ **दजला व फ़रात** हैं जो उत्तरी पहाड़ों से निकलकर अपने साथ उपजाऊ बारीक मिट्टी लाती रही हैं। फ़रात नदी रेगिस्तान में प्रवेश करने के बाद कई धाराओं में विभाजित होकर प्रवाहित होने लगती है।

यहाँ गेहूँ, जौ, मटर, मसूर आदि की खेती की जाती थी तथा भेड़-बकरी आदि जानवर पाले जाते थे।

शहरीकरण का महत्व

जब किसी अर्थव्यवस्था का विकास खाद्य उत्पादन के अतिरिक्त विस्तृत होकर **व्यापार, विनिर्माण एवं सेवाओं** के रूप में होने लगता है तो लोग समूह बनाकर कस्बों में रहना प्रारम्भ कर देते हैं।

नगरों के लोग स्वयं आत्मनिर्भर न होकर नगर या गाँव के अन्य लोगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए उन पर निर्भर होते हैं।

© JCERT not to be republished

शहरों में माल का आवागमन

मेसोपोटामिया में जहाँ खाद्य संसाधनों की पर्याप्तता थी। वहीं दूसरी ओर खनिज संसाधनों का अभाव था।

ऐसा अनुमान है कि **मेसोपोटामिया के लोग लकड़ी, ताँबा, सोना, चाँदी, राँगा, सीपी व विभिन्न प्रकार के पत्थर तुर्की, ईरान या खाड़ी पार के देशों** से मँगाते थे।

शिल्प व्यापार और सेवाओं के अलावा कुशल परिवहन व्यवस्था भी नगरीय विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। प्राचीन मेसोपोटामिया की नहरें एवं प्राकृतिक जलधाराएँ छोटी-छोटी बस्तियों के मध्य विभिन्न प्रकार की सामग्री के परिवहन का अच्छा मार्ग थीं। **फरात नदी उन दिनों व्यापार के लिए 'विश्व-मार्ग' के रूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण थी।**

लेखन कला का विकास

मेसोपोटामिया के लोग **मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते** थे। लिपिक सरकंडे की तीली की तेज नोंक से पट्टिका की नम चिकनी सतह पर कीलाकार चिह्न बना देता था।

मेसोपोटामिया के लोग अपना **हिसाब-किताब** रखने, **शब्दकोश बनाने, राजाओं के कार्यों** का वर्णन करने आदि में लेखन का प्रयोग करने लगे थे।

'सुमेरियन' मेसोपोटामिया की सर्वाधिक प्राचीन भाषा थी लेकिन 2400 ई. पू. के आसपास इस भाषा का स्थान अक्कदी भाषा ने ले लिया। **अक्कदी भाषा में कीलाकार लेखन ईसवी सन् की पहली सदी** तक अर्थात् 2000 से अधिक वर्षों तक जारी रहा।

© JCERT not to be republished

लेखन प्रणाली

कीलाक्षर या कीलाकार चिह्न जिस ध्वनि के लिए प्रयोग किया जाता था, वह एक अकेला व्यंजन या स्वर न होकर अक्षर होते थे।

मेसोपोटामिया के **लिपिक को सैकड़ों चिह्न सीखने पड़ते थे और उसे गीली पट्टी** पर उसके सूखने से पहले ही लिखना होता था। लेखन कार्य के लिए कड़ी कुशलता की आवश्यकता थी।

किसी **भाषा -विशेष की ध्वनियों** को एक दृश्य रूप में प्रस्तुत करना एक महान बौद्धिक उपलब्धि माना जाता था।

मेसोपोटामिया की **भाषा मे चिह्न अत्यधिक जटिल होते थे।** मेसोपोटामिया की विचारधारा के अनुसार सर्वप्रथम राजा के द्वारा ही व्यापार एवं लेखन की व्यवस्था की गई थी। उस **राजा का नाम एनमर्कर** था।

शहरी जीवन, व्यापार एवं लेखन कला के मध्य के सम्बन्धों को **उरुक के प्राचीन शासक 'एनमर्कर'** के विषय में लिखे गए एक **सुमेरियन महाकाव्य** में स्पष्ट किया गया है।

© JCERT not to be republished

दक्षिणी मेसोपोटामिया का शहरीकरण : मन्दिर और राजा

दक्षिणी मेसोपोटामिया में 5000 ई. पू. से बस्तियों का विकास प्रारम्भ हो गया। ये शहर अनेक प्रकार के थे। पहले वे **शहर जो धीरे-धीरे मन्दिरों के चारों** ओर विकसित हुए, **दूसरे जो व्यापार के केन्द्र के रूप में** विकसित हुए और **शेष शाही शहर।**

मेसोपोटामिया का सर्वप्रथम **ज्ञात मन्दिर एक छोटा-सा देवालय** था जो कच्ची ईंटों से निर्मित था।

मेसोपोटामिया में अनेक मन्दिरों का निर्माण किया गया। ये मन्दिर देवी-देवताओं के निवास स्थान थे।

मन्दिर में **देवता पूजा का केन्द्रबिन्दु** होता था। लोग देवी-देवताओं के लिए अन्न, दही, मछली आदि लाते थे।

देवता को सैद्धान्तिक रूप से खेतों, मत्स्य क्षेत्रों व स्थानीय लोगों के पशुधन का स्वामी माना जाता था।

उरुक नगर उन दिनों के सबसे पुराने मंदिर-नगरों में से एक था। यहाँ हमें सशस्त्र वीरों और उनके द्वारा मारे गये शत्रुओं के चित्र मिलते हैं।

युद्धबन्दियों तथा स्थानीय लोगों को अनिवार्य रूप से मन्दिर द्वारा अथवा प्रत्यक्ष रूप से शासक द्वारा प्रदान किये गये कार्य करने पड़ते थे।

मेसोपोटामिया में पर्याप्त तकनीकी प्रगति भी हुई।

अनेक प्रकार के शिल्पों के लिए काँसे के औजारों का प्रयोग होता था। **वास्तुविदों ने ईंटों के स्तम्भ** बनाना सीख लिया था।

चिकनी मिट्टी के शंकु (कोन) बनाये तथा पकाये जाते थे तथा उन्हें भिन्न-भिन्न रंगों में रंगकर मंदिरों की दीवारों में लगाया जाता था। **कुम्हार के चाक के निर्माण** से बड़े पैमाने पर बर्तन आसानी से बनाये जाने लगे।

© JCERT not to be republished

शहरी जीवन

नगरों के उदय से मेसोपोटामिया की सामाजिक व्यवस्था में एक उच्च वर्ग अस्तित्व में आया। धन-दौलत और समृद्धि का अधिकांश भाग इस छोटे से वर्ग में केन्द्रित था।

मेसोपोटामिया के समाज में **एकल परिवार को आदर्श** माना जाता था, पिता परिवार का मुखिया होता था।

उर, मेसोपोटामिया का एक प्रमुख नगर था जिसकी खुदाई 1930 के दशक में की गई थी।

उर नगर में **नगर नियोजन का अभाव** था। इस नगर में जल निकासी एवं सड़कों की व्यवस्था समकालीन मोहनजोदड़ो के समान नहीं थी।

उर नगर में जल निकासी के लिए नालियाँ घर के भीतरी आँगन में पायी गयी हैं।

घरों के कमरों के अंदर रोशनी खिड़कियों से नहीं, बल्कि उन दरवाजों से आती थी, जो आँगन में खुला करते थे।

उर नगर में यहाँ के निवासियों के लिए एक कब्रिस्तान था जिसमें राजाओं और सामान्य जनता की समाधियाँ पाई गई हैं।

© JCERT not to be republished

पशुचारक क्षेत्र में एक व्यापारिक नगर

मेसोपोटामिया का **मारी नगर शाही राजधानी के रूप** में 2000 ई. पू. के पश्चात् बहुत अधिक समृद्ध हुआ। यह नगर **फरात नदी की ऊर्ध्वधारा** पर स्थित था।

मारी नगर में किसान एवं पशुचारक दोनों ही प्रकार के लोग रहते थे। लेकिन उस प्रदेश का अधिकांश भाग भेड़-बकरी चराने के लिए ही काम में लिया जाता था।

पशुचारक खानाबदोश होते थे और कई बार किसानों के गाँवों पर हमला बोलकर उनका इकट्ठा किया माल लूट लेते थे। ये खानाबदोश लोग **अक्कदी, एमोराइट, असीरियाई व आर्मीनियन जाति** से सम्बन्धित थे।

मेसोपोटामिया के इतिहास से यह पता चलता है कि पश्चिमी मरुस्थल से **यायावर (घुमन्तू) समुदाय** के लोग कृषि से समृद्ध इस मुख्य भूमि प्रदेश में आते थे।

मारी नगर के राजा एमोराइट समुदाय के थे। उनकी पोशाक वहाँ के मूल निवासियों से भिन्न थी। इन्होंने मेसोपोटामिया के देवी-देवताओं का आदर ही नहीं किया बल्कि **स्टेपी क्षेत्र के देवता 'डैगन' के लिए मारी नगर में एक मन्दिर भी बनवाया।**

मेसोपोटामिया का समाज और वहाँ की संस्कृति विभिन्न समुदायों के लोगों एवं संस्कृतियों के लिए खुली हुई थी फलस्वरूप वहाँ एक **मिश्रित संस्कृति** का जन्म हुआ।

मारी नगर **फरात नदी के किनारे** स्थित होने के कारण व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। यहाँ से लकड़ी, ताँबा, राँगा, तेल, शराब आदि सामग्री का तुर्की, सीरिया व लेबनान से व्यापार होता था।

यद्यपि मारी राज्य **सैनिक दृष्टि से मजबूत नहीं** था परन्तु व्यापार और संमृद्धि के मामले में वह अद्वितीय था।

मारी का **विशाल राजमहल वहाँ के शाही परिवार** का निवास स्थान तो था ही साथ ही वह प्रशासन और उत्पादन, विशेष रूप से कीमती धातुओं के आभूषणों के निर्माण का मुख्य केन्द्र भी था।

© JCERT not to be republished

मेसोपोटामिया संस्कृति में शहरों का महत्व

मेसोपोटामिया के लोग शहरी जीवन को अत्यधिक महत्व देते थे जहाँ अनेक समुदायों व संस्कृतियों के लोग साथ-साथ निवास करते थे।

यहाँ के निवासी अपने शहरों पर अत्यधिक गर्व करते थे। युद्ध में शहरों के नष्ट हो जाने के पश्चात् उन्हें अपने काव्यों के माध्यम से याद करते थे। **इस बात का उल्लेख गिलगेमिश महाकाव्य** के अंत मे मिलता है। यह काव्य **बारह पट्टिकाओं** पे लिखा गया था।

लेखन कला की देन

मेसोपोटामिया की सम्पूर्ण विश्व को सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन विद्वत्तापूर्ण काल गणना की परम्परा एवं गणित है।

मेसोपोटामिया के निवासी गुणा,भाग, वर्ग एवं वर्गमूल आदि से पूर्णतः परिचित थे। उन्होंने एक वर्ष को 12 महीनों में, एक महीने को चार सप्ताहों में, एक दिन को 24 घण्टों में एवं एक घण्टे को 60 मिनट में विभाजित किया।

मेसोपोटामिया के निवासी गुणा,भाग, वर्ग एवं वर्गमूल आदि से पूर्णतः परिचित थे। उन्होंने एक वर्ष को 12 महीनों में, एक महीने को चार सप्ताहों में, एक दिन को 24 घण्टों में एवं एक घण्टे को 60 मिनट में विभाजित किया।

समय का यह विभाजन सिकन्दर नामक शासक के उत्तराधिकारियों द्वारा अपनाया गया था, वहाँ से यह रोम व इस्लाम की दुनिया में एवं बाद में मध्ययुगीन यूरोप में भी पहुँचा।

1. **एक पुराकालीन पुस्तकालय व पुरातत्ववेत्ता**

2. **असीरियाई शासक असुरबनिपाल** (668-627 ई. पू.) ने अपनी **राजधानी निनवै में एक पुस्तकालय** की स्थापना की थी। इस पुस्तकालय में इतिहास, महाकाव्य, शकुन साहित्य, ज्योतिष विद्या, स्तुतियों व कविताओं की पट्टिकाएँ उपलब्ध थीं।

3. राजा असुरबनिपाल के पुस्तकालय में **1000 मूल ग्रन्थ एवं लगभग 30,000 पट्टिकाएँ** थीं जिन्हें विषयवार विभाजित किया गया था।

4. 625 ई. पू. में दक्षिणी कछार के एक साहसी शासक **नैबोपोलास्सर ने बेबीलोनिया को असीरियाई साम्राज्य** के आधिपत्य से मुक्त कराया था।

© JCERT not to be republished

5. **बेबीलोन एक प्रसिद्ध नगर था** जिसमें विशाल राजमहल, भव्य मन्दिरों के साथ-साथ सीढ़ीदार मीनारें भी थीं। बेबीलोन के व्यापारिक घराने दूर-दूर तक व्यापार करते थे। इस नगर के गणितज्ञों एवं खगोलविदों ने अनेक अनुसंधान किये थे।

स्मरणीय तथ्य

- **ओल्ड टेस्टामेंट** ईसाइयों की पवित्र पुस्तक बाइबिल का प्रथम भाग है।
- जलप्लावन की कथा का उल्लेख **बाइबिल** में है।
- मेसोपोटामिया में **उर चंद्र देवता** थे।
- **इनाना युद्ध और प्रेम की देवी** थी
- वार्का शीर्ष **उरुक नगर** से मिला है।
- मेसोपोटामिया की सभ्यता **सिंधु घाटी सभ्यता** की समकालीन थी।
- **उर, उरुक और मारी** मेसोपोटामिया सभ्यता के प्रमुख नगर थे।
- मेसोपोटामिया का **महाकाव्य गिलगेमिश** है यह काव्य **बारह पट्टिकाओं** पे लिखा गया है।
- मेसोपोटामिया की लिपि **कीलाकार** थी।

अभ्यास के प्रश्न
बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. मेसोपोटामिया सभ्यता किस नदी के किनारे स्थित थी?

(क) दजला-फ़रात (ख) सिंधु

(ग) झेलम (घ) नील

प्रश्न 2. मेसोपोटामिया की सर्वाधिक प्राचीन भाषा कोन थी?

(क) सुमेरियन (ख) अक्कादी

(ग) कीलाकार (घ) इनमें कोई नही

प्रश्न 3. मारी नगर के राजा किस समुदाय के थे?

(क) अक्कदी (ख) एमोराइट,

(ग) असीरियाई (घ) आर्मीनियन

प्रश्न 4. मेसोपोटामिया के किस नगर में नगर नियोजन का अभाव था?

(क) उरुक (ख) बेबीलोन

(ग) उर (घ) मारी

प्रश्न 5. गिलगेमिश महाकाव्य कितने पट्टिकाओं पे लिखा गया था?

(क) दस (ख) बारह

(ग) तेरह (घ) पंद्रह

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. मेसोपोटामिया के शहरी जीवन का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 7. मेसोपोटामिया में व्यापार की स्थिति का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 8. मेसोपोटामिया के लेखन कला की चर्चा कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. मेसोपोटामिया सभ्यता की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 10. दक्षिणी मेसोपोटामिया के शहरीकरण और राजा की स्थिति का वर्णन कीजिये।

© JCERT not to be republished